Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 06/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

आधुनिक समय में नैदानिक मनोविज्ञान का विकास **(Development of clinical Psychology in Modern Times)**

भारत में सर्वप्रथम 1915 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का विभाग खुला इसी समय से भारत में मनोविज्ञान का इतिहास आरम्भ होता है। 1924 में मैसूर विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की पढ़ाई एक अलग विभाग खोलकर किया गया। 1924 में ही भारतीय मनोविज्ञान (indian Psychological Association) की स्थापना की गयी और इण्डियन जनरल ऑफि साइकोलॉजी (Indian Journal of Psychology) का प्रकाशन किया गया।

भारत में नैदानिक मनोविज्ञान का इतिहास 1938 से शुरू होता है, जब कलकत्ता विश्वविद्यालय मनोविज्ञान विभाग में एक-एक प्रयुक्त उप विभाग (applied section) खोला जिसका उद्देश्य मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को विकसित करना तथा छात्रों को व्यावसायिक निर्देशन (vocational guidance) प्रदान करना था। हालाँकि 1922 में ही प्रो० जी० एस० बोस (Prof. G. S. Bose) द्वारा सायको एनालिटिक सोसाइटी (Psychoanalytic society) की स्थापना हो चुकी थी। इस सोसाइटी ने 1940 में कलकत्ता में लुम्बिनी पार्क मानसिक अस्पताल (Lumbini Park Mental Hospital) की स्थापना किया जो लोगों को मनोविश्लेषण का प्रयोग मनश्चिकित्सा (Psycho-therapy) के रूप में करने की विशेष प्रशिक्षण भी दिया जाने लगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (University Grants commission) के 1968 रिपोर्ट के अनुसार भारत में उस समय तक 19 ऐसे विश्वविद्यालय थे जहाँ नैदानिक मनोविज्ञान की पढ़ाई स्नाकोत्तर स्तर पर होती थी। भारत में पाँच ऐसे महत्वपूर्ण नैदानिक केन्द्र (clinical centres) भी हैं जहाँ नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को प्रशिक्षण इन्टरनरशीप (Internship) को साथ दिया जाता है। वे पाँच केन्द्र हैं-(i) अखिल भारतीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान बंगलौर (All India Institute of Mental Health, Bangalore) जो आज NIMHANS (National Institute of Mental Health and Neuro Science) के नाम से प्रसिद्ध है। (ii) सेन्ट्रल इन्सटीच्यूट साइकेंट्री, कांके, राँची (Ranchi Institute of Neuropsychiatry and Allied Sciences, Kanke, Ranchi), (iv) लुम्बिन पार्क मानसिक अस्पताल, कलकत्ता (Lumbini Park Mental Hospital, Calcutta) एवं (v) पंडित बी० डी० शर्मा पोस्ट ग्रेडुएट इन्सटीच्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, रोहतक (Pt. B.D. Sharma Post Graduate Institute of Medical Sciences, Rohtak).

प्रो० बी० कृष्णन के अनुसार भारतीय नैदानिक मनोबौनिकों ने मूल रूप से कुछ खास क्षेत्रों में ही शोध एवं पठन-पाठन का कार्यक्रम रखा है। इनमें कुछ नैदनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा निदान संबंधी परीक्षणों (diagnostic tests) एवं प्रविधियों का निर्माण एवं अनुकूलन (adaptation) किया गया है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये शोधे का प्रकाशन कई जनरलों जैसे 'समीक्षा', 'इडियन जरनल ऑफ साइकोलोजी', 'सायकोलोजिकल स्टडीज', 'जनरल ऑफ सायकोलॉजिक रिसचेंज', 'इण्डियन साइकोलोजिक रिभ्यु' आदि में होता है।

भारत में नैदानिक क्रियाओं (clinical activites) को बढ़ावा देने के लिए 1943 में इण्डियन इन्सटीच्यूट ऑफ साइकेट्री एण्ड मेन्टल हाइजिन (Indian Institute of Pshychiatry and Mental Hygine) की स्थापना की गयी जिसका नाम बदलकर 'इण्डियन इन्सटीच्यूट ऑफ मेन्टल हेल्थ एण्ड ह्यूमन रिलेसन (Indian Institute of Mental Health and Human Relations) रखा गया। इस इन्सटीच्यूट द्वारा चार तरह की सेवाएँ दी जाती हैं- (i) नैदानिक कार्य, (ii) प्रोफेसनल शिक्षा, (iii) पब्लिक शिक्षा तथा (iv) सर्वे एवं शोध (research)। भारत में कुछ ऐसे भी संस्थान हैं जिनमें मनोरोगी सामाजिक कार्यकर्ताओं (Psychiatric Social Workers) को प्रशिक्षण (training) भी दिया जाता है जिनमें 'टाटा इन्सटीच्यूट ऑफ सोसल साइंसेज' (Tata Institute of Social Sciences) मुम्बई तथा बरौदा विश्वविद्यालय का सामाजिक कार्य संकाय (Social work faculty) प्रधान है। पटना विश्वविद्यालय के तहत मनोवैज्ञानिक शोध एवं सेवा संस्थान (Institute of Psychological Research and Services) द्वारा भी नैदानिक मनोविज्ञान में डिपलोमा दिया जा रहा है। भारत में कुछ संस्थान ऐसे भी हैं जहाँ निर्देशन (guidance) तथा परामश्च (connselling) में जो परामर्श मनोविज्ञान (counselling psychology) के अलावानैदानिक मनोविज्ञान का भी विशिष्ट क्षेत्र है, अलग से विशेष उपाधि दी जाती है। राष्ट्रीय शैक्षणिक शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली एक ऐसी प्रमुख संस्था है जो व्यावसायिक एवं शैक्षिक मार्गदर्शन (vocational and educational guidance) में डिप्लोमा कार्यक्रम करती है। मुम्बई में भी परामर्श (counselling) में ऐसे कार्यक्रम किये जाते हैं। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नयी दिल्ली (All India Institute of Medical Science, New Delhi) द्वारा भी नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये शोधों एवं कार्यों की स्वतंत्र पहचान की गयी है। सेन्ट्रल इन्सटीच्यूट ऑफ साइकेंट्री राँची द्वारा नैदानिक मनोविज्ञान में पी० एच० डी० की उपाधि राँची विश्वविद्यालय, राँची के संर्वधन के तहत दी जाने लगी है। भारत में मानसिक स्वास्थ्य आन्दोलन (mental health movement) अभी शैश्वावस्था में होने के कारण अभी तक नैदानिक मनोविज्ञान का एक पेशा के रूप में विकास अधूरा ही कहा जा सकता है। इसके अलावे सरकारी मानसिक अस्पतालों में अभी भी नैदानिक मनोवैज्ञानिक के पद बहुत कम हैं तथा वेतनमान भी अनाकर्शक है। इन्हें वह सम्मान भी नहीं मिलता जिनके ये हकदार हैं।